विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

खिलौना उद्योग में भारत की धमक

यदि इच्छा शक्ति और ठान ले तो बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। इसका जीता-जागता उदाहरण है देश का खिलौना उद्योग। यह अभी कल की ही बात लगती है जब भारत 20 हजार करोड़ के खिलौने अकेले चीन से आयात करता था। कोरोना के बाद बदली परिस्थितियों ने चीन को लेकर दुनिया के देशों का मोह भंग हुआ और उसके बाद हालात यह होने लगे कि दुनिया के देश चीन और उसकी नीतियों को हिकारत की दृष्टि से देखने लगे। सरकार ने भी इसे गंभीरता से लिया और सरकार के एक आह्वान और सकारात्मक नीतियों का परिणाम यह रहा कि देश में खिलौना उद्योग ने रफ्तार पकड़ी। हालात में तेजी से बदलाव का ही परिणाम है कि आज भारत में खिलौना उद्योग तेजी से फलने-फूलने लगा है। देशी बाजार में स्वदेशी खिलौनों की मांग बढ़ी तो विदेशी बाजार में भी भारतीय खिलौनों की तेजी से मांग बढ़ी है। इसमें कोई दो राय नहीं कि इसमें प्रमुख कारण खिलौना उद्योग के लिए प्रोत्साहन नीतियां प्रमुख कारण रही। आयात शुल्क बढ़ाने के साथ ही सरकार ने प्रोडक्शन लिंक इंसेटिव स्कीम लागू कर उद्योग के विकास में सहभागी बनी। आज 12 प्रतिशत विकास दर के साथ खिलौना उद्योग बढ़ रहा है और वह भी चक्रवृद्धि विकास दर है। इसे भारतीय खिलौना उद्योग के लिए शुभ संकेत ही माना जा सकता है।

देखा जाए तो खिलौना उद्योग पर चीन का एकाधिकार ही रहा है। लगभग 80 प्रतिशत बाजार चीन के पास रहा है। ऐसे में चीन के खिलौना उद्योग को चुनौती देना बड़ी मुश्किल भरा काम रहा है। पर एक आह्वान ने सब कुछ बदल कर रख दिया। केन्द्र व राज्य सरकारों के समन्वित प्रयासों से देश में खिलौना उद्योग ने गति पकड़ ली है। एक समय था जब भारत चीन से 20 हजार करोड़ का खिलौना आयात करता था। और आज हालात यह हो गए हैं कि आज भारत में खिलौनों का घरेलू बाजार 124.73 अरब का हो गया है। भारत से खिलौनों के निर्यात में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। 2018-19 में 16.81 करोड़ के खिलौने निर्यात होते थे 2022-23 में बढ़कर 27.08 अरब डॉलर हो गया है। माना जा रहा है कि 2028 तक भारत में खिलौना उद्योग 249.47 अरब रुपये को पार कर जाएगा। इसके पीछे एक कारण यह भी है कि जो माहौल बना और बनाया गया उसका परिणाम यह रहा कि बच्चों की पहली पसंद भी भारतीय खिलौने ही हो गए हैं।

केन्द्र व राज्य सरकारों के समन्वित प्रयासों से देश में खिलौना उद्योग ने गति पकड़ ली है। एक समय था जब भारत चीन से 20 हजार करोड़ का खिलौना आयात करता था। और आज हालात यह हो गए हैं कि आज भारत में खिलौनों का घरेलू बाजार 124.73 अरब का हो गया है।

खिलौना उद्योग में आज 4000 एमएसएमई अपनी भागीदारी निभा रही है। एक सबसे महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एमएसएमई उद्योग देश का ग्रोथ इंजन होता है। एमएसएमई उद्योगों से जहां रोजगार के अधिक अवसर विकसित होते हैं वहीं स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध होता है। होता यह है कि बड़े उद्योगों में एक सीमा तक ही रोजगार के अवसर होते हैं क्योंकि वहां टेकनीक का अधिक उपयोग होता है तो दूसरी और एमएसएमई उद्योग में रोजगार के अधिक अवसर होने से आर्थिक व्यवस्था को नई दिशा मिलती है। स्थानीय स्तर से लेकर निर्यात तक के अवसर आसानी से उपलब्ध होते हैं।

जहां तक खिलौनों का संबंध है 2600 ईसा पूर्व सुमेरियन सभ्यता के अवशेषों में मानव और पशु आकृति के अवशेष मिले हैं जिनके बारे में यह माना जाता है कि यह उस जमाने के खिलौनों के ही अवशेष है। 500 ईसा पूर्व ग्रीक के अवशेषों में खिलौनों के अवशेष देखे गए हैं। जहां तक हमारे देश की बात है रामायण-महाभारत व पुराणों में खेल-खिलौनों की बाकायदा चर्चा मिलती है। आज प्लास्टिक का दौर है तो सर्वाधिक खिलौने प्लास्टिक के ही बनने लगे हैं। हमारे यहां मिट्टी, धातु, टेरीकोट्टा, कपड़े, लकड़ी, सींग, रत्नों आदि से निर्मित खिलौनें तैयार होते है। समय के अनुसार खिलौनों की मांग भी बदलती रही है। एक समय था और आज भी बार्बी की मांग सबसे अधिक देखी जाती है। इसके बाद क्यूबिक की भी मांग सबसे अधिक देखी गई। गेंद, बंदूक, जहाज, कार, ट्रेन, डमडमी, बाजे, सिटी और इसी तरह के खिलौनें सामान्य से लेकर ऑटोमेटिक, चाबी से चलने वाले और आज तो सेल व सोलर से चलने वाले खिलौने बाजार में आने लगे हैं। दरअसल खिलौने बच्चों के मनबहलाव के ही साधन ना होकर ज्ञानवर्द्धक और बच्चों की मानसिकता के विकास में भी सहायक रहे हैं। खेल-खेल में सीखने की प्रवृति खिलौनों के माध्यम से रही है। खिलौने मानसिक विकास के भी प्रमुख माध्यम रहे हैं।

दरअसल सरकार ने खिलौनों पर आयात शुल्क 20 से प्रतिशत से बढ़ाकर 70 प्रतिशत कर देने, कच्चे माल की सहज उपलब्धता, ईज ऑफ डूइंग के तहत आसानी से उद्योगों की स्थापना और इसके साथ ही पीएलआई यानी कि प्रोडक्शन लिंक इंसेटिव से उद्योग को बढ़ावा मिला है। इसके साथ ही सरकार द्वारा निर्यात को आसान और आम उद्यमी की पहुंच में करने से देशी-विदेशी बाजार मिलने में आसानी हुई है। देश के हस्तशिल्प निर्यात संवर्द्धन परिषद द्वारा भी आवश्यक सहयोग दिया जा रहा है। इसके साथ ही राज्य सरकारें भी आगे आई है और यही कारण है कि बहुत कम समय में देश के खिलौना उद्योग ने देश-विदेश में अपनी पहचान बनाई है।

अंत में एक बात और विदेशों में प्रतिस्पर्धा में बना रहना है तो गुणवत्ता, मूल्य प्रतिस्पर्धा के साथ ही नवाचार और शोध को बढ़ावा देना होगा। सशक्त आरएण्डडी टीम बनानी होगी और इसके साथ बाजार की मांग को भी समझना होगा। यह भी ध्यान रखना होगा कि खिलौना उद्योग का लक्षित वर्ग बच्चे हैं ऐसे में बच्चों के लिए हानिकारक ना हो ऐसे कच्चे माल का ही उपयोग करना होगा। बच्चो के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना होगा। सरकार को भी इस दिशा में सहयोगी की भूमिका निभानी होगी और तकनीकी, वित्तीय व मार्गदर्शक की भूमिका निभानी होगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

महात्मा गांधी और हिन्दू धर्म

महात्मा गांधी हिन्दु धर्म की अनेक विशेषताओं से प्रभावित हैं, उन्हें इसमें अन्य धर्मों का सार तत्व नजर आता है। हिन्दू धर्म का सौन्दर्य इसकी सर्व व्यापी समग्रता (All embracing Inclusiveness) में निहित है। (यंग इंडिया 17 सितम्बर 1925) एक अमेरिकन के पूछे जाने पर कि वह हिन्दू क्यों हैं, उत्तर में गांधी ने कहा– "मैं यह पसन्द नहीं करता कि धर्मान्तरण हेतु किसी धर्म का प्रचार किया जाय, धर्म प्रचार की वस्तु नहीं है, यह जीवन में धारण करने की वस्तु है इसी प्रकार इसका प्रचार हो जाता है। हिन्दु धर्म आत्म केन्द्रित (Exclusive) धर्म नहीं है, यह केवल दूसरे धर्मों का सम्मान करना ही नहीं सिखाता बल्कि उनकी अच्छाईयों को ग्रहण करने भी आग्रह करता है। अहिंसा सभी धर्मों में मान्य है लेकिन इसकी सर्वाधिक अभिव्यक्ति और क्रियान्विति हिन्दू धर्म में मिलती है। मैं जैन और बौद्ध धर्मों को हिन्दु धर्म से पृथक नहीं मानता। हिन्दु धर्म केवल मनुष्य जाति की एकता की बात ही नहीं करता बल्कि समस्त प्राणियों को भी इसमें सम्मिलित करता है। (यंग इंडिया, 20 अक्टूबर 1927)

अहिंसक तरीकों से सत्य की खोज ही हिन्दू धर्म है। ईश्वर में विश्वास न करने वाला भी हिन्दू है। हिन्दू धर्म सभी धर्मों में सर्वाधिक सहिष्णु है।

यंग इण्डिया – 24 अप्रैल, 1924

मैं हिन्दू शास्त्रों से प्रभावित हूँ लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि उनमें लिखी हर बात को स्वीकार करूं। बड़े से बड़े विद्वान द्वारा लिखी हुई शास्त्रों की व्याख्या को मानने के लिये भी मैं तैयार नहीं हूँ। हिन्दू धर्म में विश्व के सभी पैगम्बरों की पूजा करने का भी स्थान है। यह मिशिनरी धर्म नहीं है।"

यंग इंडिया 6 अक्टूबर 1921

हिन्दु धर्म गतिहीनता (Stagnation) को नापसन्द करता है। ज्ञान अपरिमित है और ऐसी ही है सत्य की क्रियान्विति। यंग इंडिया – 8 अप्रैल, 1926

गांधीजी वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों आदि हिन्दू शास्त्रों में निहित ज्ञान से प्रभावित है लेकिन एक श्लोक के अध्ययन से चमत्कृत हैं वह इसे हिन्दु धर्म का सार मानते है यह ईशापनिषद का यह श्लोक है:-

ईशावास्यमिंद सर्व यातकिंच जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तिेन भुंजीथा मा गृध: कस्यस्विद्धनम्

अर्थात्–ईश्वर इस जगत का मालिक है, अत: सब कुछ उसे समर्पित कर दो और जो उसने प्रदान किया है उसका उपभोग करो और अन्य किसी भी सम्पदा पर कुदृष्टि मत रखो।

गांधीजी ने तो यहाँ तक कह दिया है कि ईशापनिषद का यह प्रथम श्लोक ही हिन्दुधर्म को सदा के लिए जीवित रखने के लिए पर्याप्त है। गांधीजी ने 17 जनवरी 1937 को ट्रावनकोर में दिये हरिपद भाषण में इसको स्पष्ट करते हुये बताया कि विश्व में जो कुछ है उस पर स्वामित्व भाव न हो, जो तुम्हारी आवश्वकता है उतना ही ग्रहण करो। 'कृष्णार्पणमस्तु' अर्थात् सब कुछ कृष्ण (ईश्वर) को अर्पित है। हिन्दु धर्म के सार के रूप में उन्होंने यही माना है कि किसी वस्तु के उपभोग का अधिकार त्याग करने पर ही संभव है, त्याग तो हमारे स्वयं के अस्तित्व, हमारी आत्मा हेतु परमावश्यक है। जो तुम्हारी नहीं है, उसकी लालसा मत रखो।

हिन्दू धर्म की विशेषताओं के बारे में गांधीजी ने बताया कि इसके जीवित रहने का एक बड़ा कारण इसका आध्यात्म की ओर झुकाव है। आखिर कोई बात तो है जिसने इसे जीवित रखा है जबकि बेबोलिनियन, सीरियन, पर्सियन, इजीपटियन सभ्यताओं का पतन हो गया है। रोम और यूनान कहाँ है? नि:संदेह हिन्दुधर्म में अनेक विकृतियाँ आ गयी है लेकिन इसके जीवित रहने का मुख्य कारण यह है कि इसने आध्यात्मिकता को प्राथमिकता दी है। केवल मनुष्य तक ही नहीं इसने पशु पक्षियों, वनस्पति, प्रकृति से भी मनुष्य का तादात्मय जोड़ा है। गाय की पूजा इसका प्रतीक है। हिन्दु धर्म बीती हुई शक्ति अथवा मृत धर्म नहीं है। गांधी मानते हैं कि चतुर्वर्ण में अनेक विकृतियाँ आ गई हैं लेकिन यह एक अद्भुत व्यवस्था है जो विश्व में कहीं नहीं पायी जाती है। इस व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है न कि इसे नष्ट करने की।

सी.एफ इन्ड्रूज (C.F.Andrews) से चर्चा करते हुए गांधी ने कहा कि धर्म एक व्यक्तिगत मामला है, सभी धर्म समान हैं, सभी धर्मों के महापुरूषों की शिक्षाओं को समझा चाहिये, उनका आदर करना चाहिये, हमें सहिष्णु होना चाहिये। बलात् धर्म परिवर्तन निन्दनीय है। अपने-अपने धर्मों में बने रहना चाहिये। यही बात गीता में श्रीकृष्ण ने कही है– **स्वधर्मे निधनं श्रेय: पर धर्मो भयावह।** यहाँ स्वधर्म कर्तव्य के रूप मेंभी परिभाषित किया गया है। शिकागो में डिविनिटि स्कूल की प्रोफेसर वैन्डी डोनिगर ने हिन्दू धर्म पर बहुत अध्ययन किया है। उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा कि हिन्दु धर्म अपने उदारवादी अनुयायियों के कारण सभी परिस्थितियों में ऊर्जावान बना रहता है।

यह सर्वविदित है कि महात्मा गांधी हिन्दु धर्म में व्याप्त विकृतियों, विसंगतियों, पर निर्मम प्रहार भी करते हैं। छुआ-छूत, ऊंच-नींच की कठोर शब्दों में भर्त्सना करते हैं जितना उन्होंने अछूतोद्धार के लिए किया वह अभिनन्दनीय है।

गांधीजी का एक यह वाक्य उनके सनातनी हिन्दू होते हुये भी अन्य धर्मों के प्रति उनके आदर भाव को कम नहीं करता। 'हिन्दू धर्म और उसके सौन्दर्य के प्रति मेरी आस्था.... अन्य धर्मों के प्रति मुझे भी पूर्वाग्रहित नहीं करती।' उनके दृष्टिकोण में हिन्दू धर्म समाजोन्मुखी, उदारवादी, नैतिक एवं समन्वयी है। यह मानवीयता से परिपूर्ण, बहुवादितापूर्ण, अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु एवं मतांधता से पूर्ण रूपेण विमुक्त है। गांधी के अनुसार हिन्दु धर्म की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि यह न केवल अन्य धर्मों का आदर करता है बल्कि उनके सार्थक तत्वों कों स्वीकार भी करता है। सनातन धर्म शब्द का प्रयोग उनके सार्थक तत्वों को स्वीकार भी करता है। सनातन धर्म शब्द का प्रयोग इसे परम्परागत संस्कृत संप्रदाय तक सीमित नहीं करता बल्कि उसके निहित प्रवृतियों को उजागर करता है। गांधी इसे मात्र वेद और उपनिषद पर आधारित करके नहीं देखते बल्कि अर्वाचीन काल से उसके प्रगत्यात्मक विकास के चरणों को नापने का भी प्रयास करते हैं।

विनम्रता गांधी का एक विशिष्ट गुण रहा है। रोमां रोला ने तो उन्हें दूसरा ईसा मसीह बताया है और यहाँ तक कह दिया कि विनम्रता में तो वह ईसा मसीह से भी आगे हैं।

–प्रो. के. एल. कमल,
पूर्व कुलपति,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

शाला दर्पण शिक्षक एप से नहीं लगेगी शिक्षकों व विद्यार्थियों की हाजिरी

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर ने आदेश जारी कर आगामी आदेश तक एप से ऑनलाइन हाजिरी स्थगित की

हनुमानगढ़, (निसं)। जिले व प्रदेश के उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों में शाला दर्पण शिक्षक एप से ऑनलाइन हाजिरी आगामी आदेश तक स्थगित कर दी गई है। एप से हाजिरी का आगाज दो अक्टूबर से किया गया था। मगर पहले ही दिन कई तरह की तकनीकी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। विद्यालयों में शिक्षक स्वयं की तथा विद्यार्थियों की एप से हाजिरी लगाने के लिए माथापच्ची करते रहे। प्रदेश भर में सैकड़ों विद्यालयों में हाजिरी लग भी नहीं सकी थी। ऐसे में माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर ने मंगलवार को आदेश जारी किया कि आगामी आदेश तक शाला दर्पण शिक्षक एप से ऑनलाइन हाजिरी स्थगित की जाती है।

- **शिक्षक संगठनों के विरोध, अधिक समय लगने, नेटवर्क समस्या आदि के चलते निर्णय लिया**
- **शिक्षक संगठन इस प्रक्रिया का उलझाने वाली और अध्यापन कार्य प्रभावित करने वाली बताकर प्रारंभ से ही विरोध कर रहे थे एक बार प्रक्रिया स्थगित करने का यह भी एक प्रमुख कारण माना जा रहा है**

आदेश में बताया गया कि एनआईसी जयपुर से प्राप्त सूचना के अनुसार तकनीकी कारणों के चलते एप पर उपस्थिति की कार्यवाही स्थगित की जाती है। एप से हाजिरी की प्रक्रिया का शिक्षक संगठन भी विरोध कर रहे हैं। कई संगठनों ने आंदोलन शुरू करने की भी चेतावनी दे रखी थी। शिक्षक संगठन इस प्रक्रिया का उलझाने वाली और अध्यापन कार्य प्रभावित करने वाली बताकर प्रारंभ से ही विरोध कर रहे थे। एक बार प्रक्रिया स्थगित करने का यह भी एक प्रमुख कारण माना जा रहा है।

शिक्षक संगठनों के अनुसार कर्मचारी उपस्थिति रजिस्टर, शाला दर्पण पोर्टल पर उपस्थिति और अब शाला दर्पण शिक्षक एप पर उपस्थिति, एक ही कार्य को तीन जगह करना अव्यवहारिक और औचित्यहीन है। शिक्षकों व विद्यालयों को अनावश्यक प्रयोगशाला बनाना उचित नहीं है। यह प्रयोग बन्द कर विद्यालयों में इन्फ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध कराने पर ध्यान देना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट नेटवर्क बड़ी परेशानी है। प्रदेश के कई गांवों में इंटरनेट नेटवर्क नहीं होने से एप पर हाजिरी दर्ज करने में शिक्षकों को परेशानी होगी। ऑनलाइन हाजरी के फेर में पहले पीरियड का समय यूं ही बर्बाद होने से शिक्षण व्यवस्था प्रभावित होगी। राज्य सरकार ने पिछले दो-तीन साल में कई विद्यालय क्रमोन्नत किए हैं। हालांकि तुलनात्मक रूप से हनुमानगढ़ जिले में क्रमोन्नत विद्यालयों की संख्या अन्य कई जिलों से कम ही रही है।

24 जोड़ों का नि:शुल्क सामूहिक निकाह सम्पन्न

नवविवाहित जोड़ों को उपहार स्वरूप घरेलू सामान दिये गये

भीलवाड़ा, (निसं)। अल्फिया कन्फेक्शनरी की और से आयोजित नि:शुल्क विवाह समारोह श्याम लाल नक्कड अम्बर कन्फेक्शनरी इंदोर की अध्यक्षता व अक्षय त्रिपाठी जिला कांग्रेस अध्यक्ष के मुख्य अतिथ्य में अंजुमन सीनीयर सैकण्डरी स्कूल में 24 जोड़ों का निकाह शहर काजी मुफ्ती अशरफ जिलानी अजहरी के सानिध्य मे सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

अल्फिया कन्फेक्शनरी के हाजी अहमद हुसैन मसुरी (टोस वाले) चांदेड, मोहम्मद अली, हाजी आरिफ मोहम्मद ने आये हुये मेहमानों का इस्तकबाल किया। सामूहिक विवाह में अल्फिया कन्फेक्शनरी की तरफ से नवविवाहित जोडो को उपहार स्वरूप चांदी की पायजेब, पलंग, अलमारी व घरेलू सामान उपहार के रूप में दिये गये। 24 सामूहिक जोड़ों में से माहिनूर मंसूरी द्वारा मक्का मदीना की उमराह की लॉटरी निकाली जिसमें 23 नम्बर जोड़े को उमराह फर्म की और से नि:शुल्क यात्रा होगी। सम्मेलन में राजस्थान, इन्दौर, खण्डवा, अहमदाबाद, मुम्बई, कानपुर सहित स्थानीय जयपुर, नसीराबाद, मकराना, बोरावड की खेडा टीमों की ओर से हाजी अहमद हुसैन, मोहम्मद अली व हाजी आरिफ की हौसला अफजाई गुलपोशी, दस्तारबंदी करके की गई। मसूरी चांदेड परिवार की ओर से मेहमान नवाजी की गई। अखिल भारतीय मंसूरी समाज के अध्यक्ष हाजी शफी मोहम्मद मंसूरी, प्रदेश महामंत्री हाजी जमालुदीन, प्रदेश सचिव मुश्ताक अली मंसूरी, युवा प्रदेश उपाध्यक्ष अरशद अमन भी सम्मेलन की कामयाबी पर अहमद हुसैन व मोहम्मद अली का सम्मान किया गया।

तेली बिरादरी और मंसूरी इस्तेमाई शादी कमेटी की ओर से स्मृति चिन्ह व माला पहनाकर इस्तकबाल किया गया। डॉ. मोहम्मद शफीक डिप्टी डायरेक्टर और नर्सिंग सुपरिडेन्ट एसएमएस जयपुर बदरूनिशा को शॉल ओढ़ाकर प्रशस्ती पत्र देकर सम्मेलन कमेटी की ओर से सम्मान किया गया। प्रदेश अध्यक्ष हाजी शफी मोहम्मद प्रदेश सचिव व जिला वक्फ बोर्ड खंजाची मुश्ताक अली मसूरी को भी सम्मानित किया गया। हाजी अब्दुल सलाम मंसूरी पूर्व नेता प्रतिपक्ष, हाजी इमामुद्दीन मंसूरी, हाजी बशीर मोहम्मद थेम, हाजी हबीब चौहान, हुसैन गोरी, हाजी अहमद गोरी, निजाम मंसूरी, हाजी उमर मसूरी, हाजी नबी अली गोरी, हाजी अख्तर मंसूरी, सोराब गोरी, शौकत चौहान, बल्लू गोरी कल्लू खत्री, उमर चांदेड, हाजी सोहेल, हाजी अकरम छिपा, हाजी हारून, सहित इनकी टीम के लोगों ने खिदमत देकर निकाह, नाश्ता, खाना व उपहार संबंधी कार्यों को जिम्मेदारी से पूरा किया। इनका सहयोग सराहनीय रहा। हाजी अहमद हुसैन मंसूरी, मोहम्मद अली व हाजी आरिफ मंसूरी परिवार की ओर से सम्मानित किया गया।

राशिफल गुरूवार 5 अक्टूबर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, मृगशिरा नक्षत्र सांय 7:40 तक, वारियान योग शुक्रवार प्रात: 5:22 तक, विष्टि करण सांय 6:08 तक, चन्द्रमा प्रात: 6:59 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृष, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग रात्रि 7:40 तक रहेगा। आज भद्रा सांय 6:08 तक है। आज सप्तमी का श्राद्ध है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:52 तक, चर 10:48 से 12:15 तक, लाभ-अमृत 12:15 से 3:11 तक, शुभ 4:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:24, सूर्यास्त 6:06

मेष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मकर

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मीन

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

शाहपुरा में बारहठ बंधुओं के पैनोरमा निर्माण का भूमि पूजन किया

10 माह में 4 करोड़ की लागत से बनेगा ऐतिहासिक भवन

भीलवाड़ा/शाहपुरा, (निसं)। शाहपुरा में क्रांतिकारी बारहठ बंधुओं के पैनोरमा निर्माण के प्रशासनिक भवन के लिए बुधवार को भूमि पूजन किया गया। राजस्व मंत्री रामलाल जाट के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह के दौरान आईएएस व राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के सीईओ शाहपुरा जिला कलेक्टर टीकम चंद बोहरा भूमि पूजन में शामिल हुए। राज्य सरकार की ओर से बजट में घोषित बारहठ पैनोरमा के निर्माण से युवा पीढ़ी केसरीसिंह, जोरावर सिंह, प्रतापसिंह बारहठ के स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी व उनके इतिहास को जान पाएंगे। राज्य सरकार द्वारा राजस्थान धरोहर प्राधिकरण अंतर्गत 4 करोड़ की लागत से पैनारोमा निर्माण की घोषणा की गई। जिसका भूमि पूजन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

राजस्व मंत्री रामलाल जाट एवं शाहपुरा कलेक्टर टीकम चंद बोहरा के सानिध्य में भूमि पूजन की रस्म अदा की गई।

इस भूमि पूजन कार्यक्रम में राजस्व मंत्री रामलाल जाट एवं राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी व आईएएस शाहपुरा कलेक्टर टीकम चंद बोहरा के सानिध्य में भूमि पूजन की रस्म अदा की गई। मुख्य अतिथि राजस्व मंत्री रामलाल जाट ने कहा कि आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। सेनानियों की प्रेरणा से ही सशक्त व विकसित भारत का निर्माण होगा। शाहपुरा के बारहठ परिवार में देशभक्ति का जज्बा कूट कूट कर भरा था। यह परिवार देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिये स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े थे। उनके आदर्शों को आत्मसात करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बलिदान, व्यक्तित्व और आदर्शों से प्रेरणा लेकर जीवन में चरित्र और नैतिक मूल्यों के गुणों को आत्मसात करें। यह पर्व राष्ट्रीय एकता, शांति और सदभाव की भावना को सुदृढ़ करने का अवसर है। उन्होंने युवाओं से देश और प्रदेश के विकास और प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि के लिए अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का आव्हान किया है। राजस्व मंत्री रामलाल जाट ने कहा कि महान स्वतंत्रता सेनानियों के मूल्यों, आदर्शों व सिद्धान्तों को आत्मसात करना हम सभी का कर्तव्य है। भारत के प्रजातंत्र की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रजातंत्र में हमारे देश ने एक अतुल्य शासन प्रणाली प्रस्तुत किया है। कहा कि हमारे प्रजातंत्र में विरोधियों के मुद्दों को भी आत्मसात करने की विलक्षण क्षमता है। उन्होंने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में जिला के स्वतंत्रता सेनानियों, साहित्यकारों व आम लोगों की अग्रणी भूमिका रही है।

इस पैनोरमा में बारहठ परिवार के इतिहास, उनके द्वारा किये आंदोलन, देश को आजादी दिलाने में उनका योगदान सहित जानकारियां उपलब्ध कराई जाएगी। बारहठ परिवार से जुड़ी वस्तुओं की भी प्रदर्शनी लगाई जाएगी।